Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 6

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्तिकला

=



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

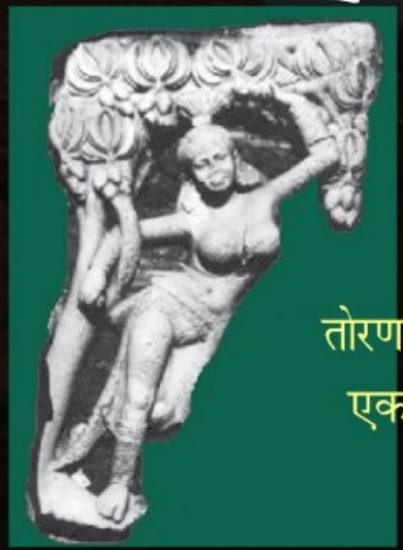
सांची

लोक परंपराऐं

- सांची में उत्कीर्णित बहुत सी अन्य मूर्तियां शायद बौद्ध धर्म से सीधी जुड़ी नहीं थी।

शालभंजिका :-

- इनमें कुछ सुंदर स्त्रियां भी मूर्तियों में उत्कीर्णित है जो तोरणद्वार के किनारे पर पेड़ पकड़ कर झूलती हुई दिखती हैं।



तोरणद्वार पर
एक स्त्री

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बौद्ध

- शुरू-शुरू में विद्वान इस मूर्ति के महत्त्व के बारे में थोड़े असमंजस में थे।
- इस मूर्ति का त्याग और तपस्या से कोई रिश्ता नज़र नहीं आता था।
- यद्यपि साहित्यिक परंपराओं के अध्ययन से वे समझ पाए कि यह संस्कृत भाषा में वर्णित शालभंजिका की मूर्ति है।
- लोक परंपरा में यह माना जाता था कि इस स्त्री द्वारा छुए जाने से वृक्षों में फूल खिल उठते थे और फल होने लगते थे।
- ऐसा लगता है कि यह एक शुभ प्रतीक माना जाता था और इस कारण स्तूप के अलंकरण में प्रयुक्त हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शालभंजिका की मूर्ति से पता चलता है कि जो लोग बौद्ध धर्म में आए उन्होंने बुद्ध-पूर्व और बौद्ध धर्म से इतर दूसरे विश्वासों, प्रथाओं और धारणाओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया।
- साँची की मूर्तियों में पाए गए कई प्रतीक या चिह्न निश्चय ही इन्हीं परंपराओं से उभरे थे।

सांची में हाथी :- जानवरों के कुछ बहुत खूबसूरत उत्कीर्णन यहाँ पर पाए गए हैं।



सांची में हाथी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन जानवरों में हाथी, घोड़े, बंदर और गाय-बैल शामिल हैं।
- हालाँकि साँची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियाँ हैं।
- ऐसा लगता है कि यहाँ पर लोगों को आकर्षित करने के लिए जानवरों का उत्कीर्णन किया गया था।
- साथ ही जानवरों को मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

गजलक्ष्मी :-

mg



- इन प्रतीकों में कमल दल और हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति प्रमुख है।
- ये हाथी उनके ऊपर जल छिड़क रहे हैं जैसे वे उनका अभिषेक कर रहे हों।

(i) कुछ इतिहासकार उन्हें बुद्ध की माँ माया से जोड़ते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) कुछ उन्हें लोकप्रिय देवी गजलक्ष्मी मानते हैं। गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली देवी थीं जिन्हें प्राय: हाथियों के साथ जोड़ा जाता है।

(iii) कुछ इन उत्कीर्णित मूर्तियों को देखने वाले माया और गजलक्ष्मी दोनों से जोड़ते थे।

सांची में सर्प :-

कई स्तंभों पर दिखाए गए सर्पों को भी देखिए



सांची में 'सर्प'

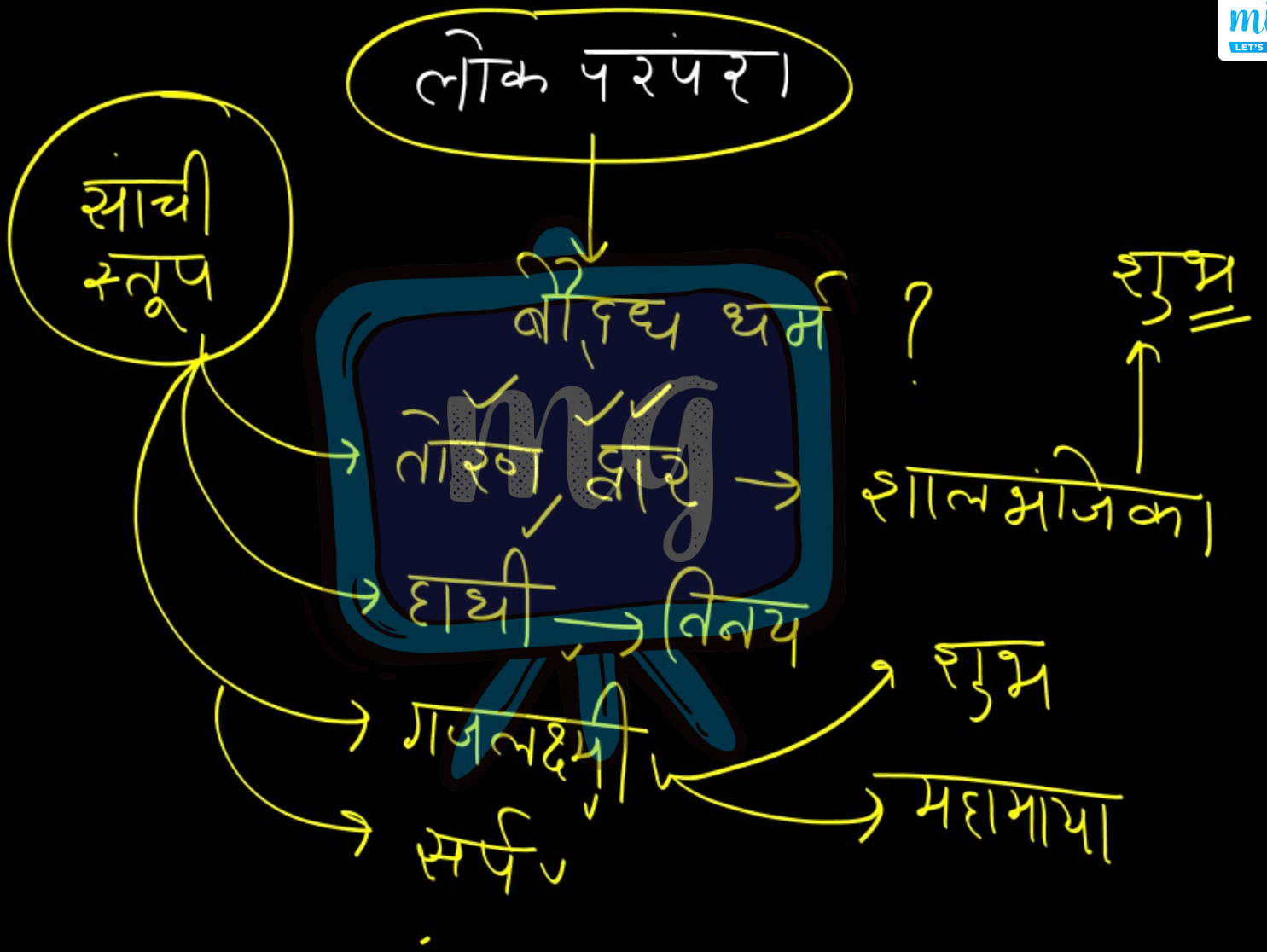
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह प्रतीक (सर्प) लोक परंपराओं से लिया गया प्रतीत होता है जिनका ग्रंथों में हमेशा ज़िक्र नहीं होता था।
- दिलचस्प बात यह है कि कला पर लिखने वाले आधुनिक इतिहासकारों में एक शुरुआती इतिहासकार जेम्स फर्गुसन ने साँची को वृक्ष और सर्प पूजा का केंद्र माना था। वे बौद्ध साहित्य से अनभिज्ञ थे। तब तक ज़्यादातर बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद नहीं हुआ था। इसलिए उन्होंने सिर्फ़ उत्कीर्णित मूर्तियों का अध्ययन करके अपने निष्कर्ष निकाले थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सांची स्तूप से हम किस प्रकार लोक परंपरा को जान सकते हैं?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतीत से प्राप्त चित्र

पत्थर की कलाकृतियाँ लंबे समय तक सुरक्षित रह जाती हैं। इसलिए इतिहासकारों को यह आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

अतीत में चित्रकारी जैसे संप्रेषण के दूसरे माध्यम भी इस्तेमाल किए जाते थे। उनमें जो सबसे अच्छी हालत में बचे हुए हैं वे गुफाओं की दीवारों पर बने चित्र हैं। इनमें अजंता (महाराष्ट्र) की चित्रकारी काफ़ी प्रसिद्ध है।

अजंता के चित्र जातकों की कथाएँ दिखाते हैं। इनमें राज दरबार का जीवन, शोभा यात्राएँ, काम करते हुए स्त्री-पुरुष और त्यौहार मनाने के चित्र दिखाए गए हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

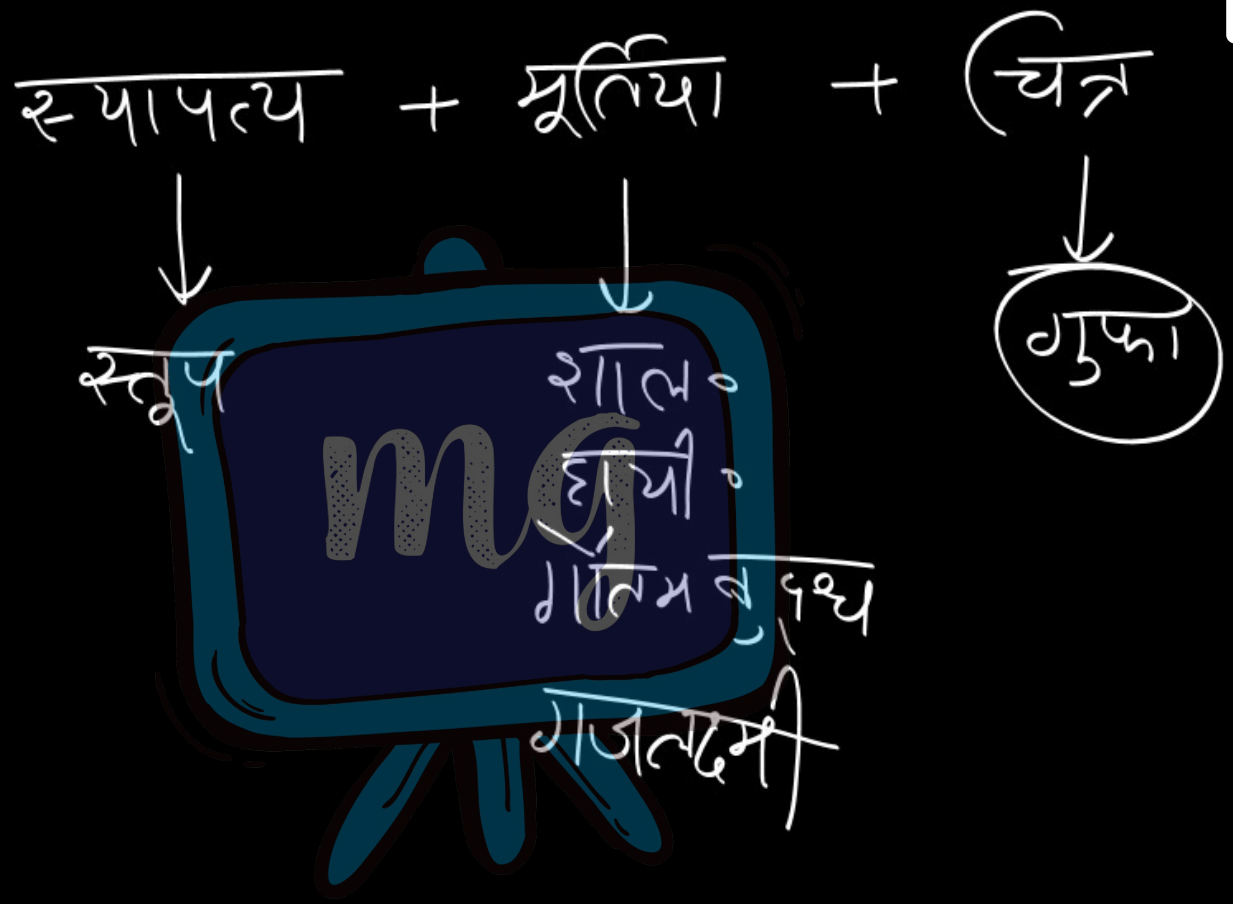
- कलाकारों ने त्रिविम रूप देने के लिए आभाभेद तकनीक का प्रयोग किया।
- कुछ चित्र बिल्कुल स्वाभाविक और सजीव लगते हैं।



अजन्ता से एक चित्र : बैठा हुआ व्यक्ति और उसके सेवक

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नयी धार्मिक परंपराऐं

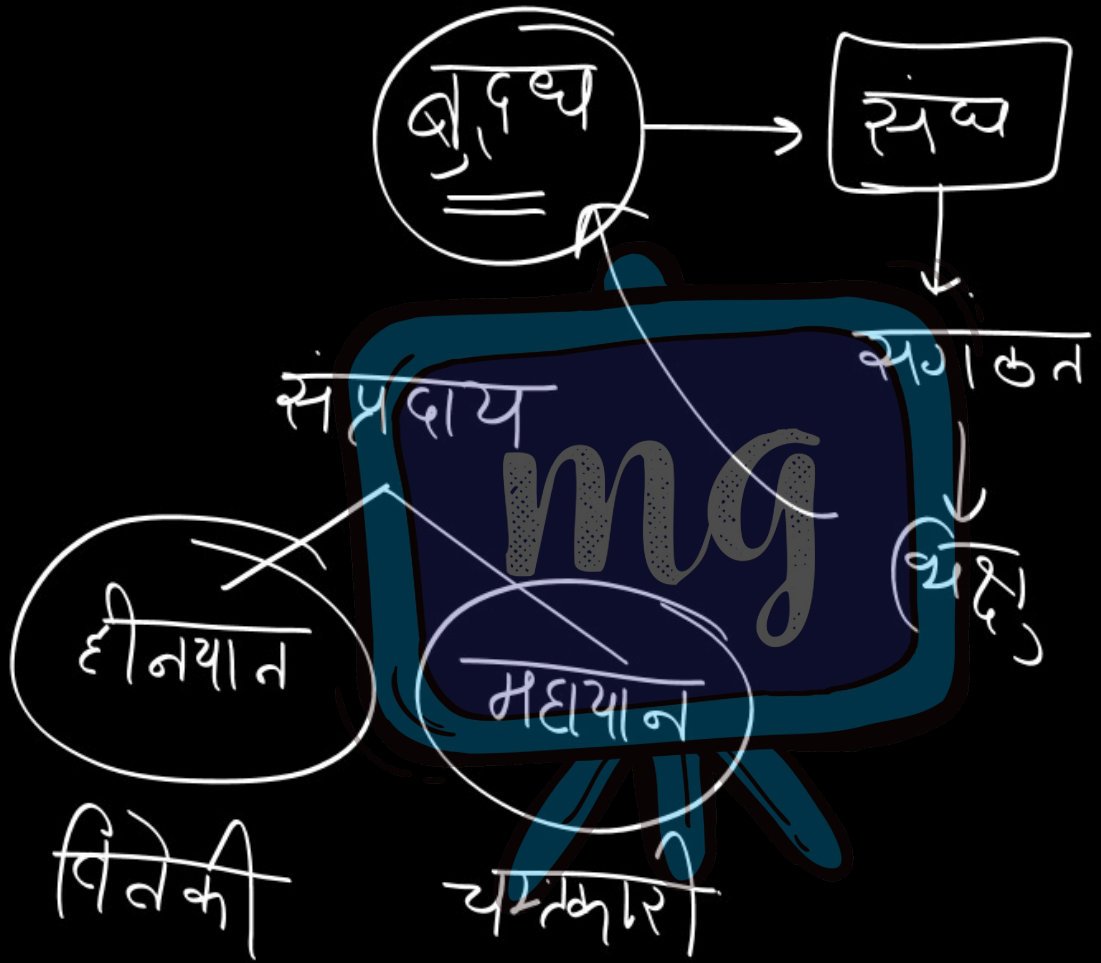


महायान बौद्ध मत का विकास :-

- ईसा की प्रथम सदी के बाद बौद्ध अवधारणाओं और व्यवहार में बदलाव नज़र आये।
- प्रारंभिक बौद्ध सत में निब्बान के लिए व्यक्तिगत प्रयास को विशेष महत्त्व दिया गया था। बुद्ध को भी एक मनुष्य समझा जाता था जिन्होंने व्यक्तिगत प्रयास से प्रबोधन और निब्बान प्राप्त किया।
- धीरे-धीरे एक मुक्तिदाता की कल्पना उभरने लगी। यह विश्वास किया जाने लगा कि वे मुक्ति दिलवा सकते थे।
- साथ-साथ बोधिसत्त की अवधारणा भी उभरने लगी।
- बोधिसत्तों को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



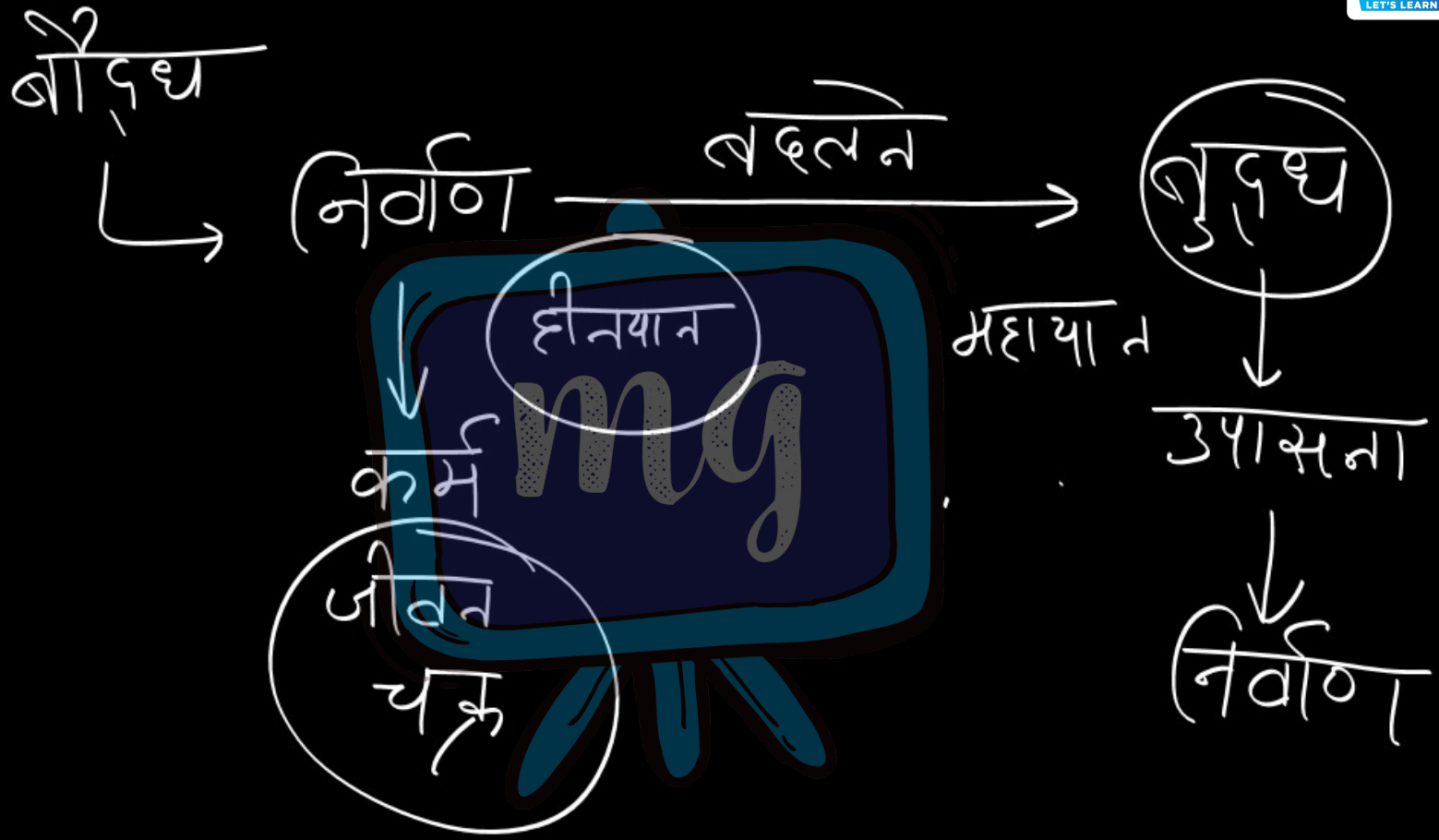
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लेकिन वे इस पुण्य का प्रयोग दुनिया को दुखों में छोड़ देने के लिए और निब्बान प्राप्ति के लिए नहीं करते थे। बल्कि वे इससे दूसरों की सहायता करते थे।
- बुद्ध और बोधिसत्तों की मूर्तियों की पूजा इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग बन गई।
- चिंतन की इस नयी परंपरा को महायान के नाम से जाना गया।
- जिन लोगों ने इन विश्वासों को अपनाया उन्होंने पुरानी परंपरा को हीनयान नाम से संबोधित किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हीनयान या थेरवाद?

उपासना

महायान के अनुयायी दूसरी बौद्ध परंपराओं के समर्थकों को हीनयान के अनुयायी कहते थे। लेकिन, पुरातन परंपरा के अनुयायी खुद को थेरवादी कहते थे। इसका मतलब है वे लोग जिन्होंने पुराने, प्रतिष्ठित शिक्षकों (जिन्हें थेर कहते थे) के बताए रास्ते पर चलने वाले।

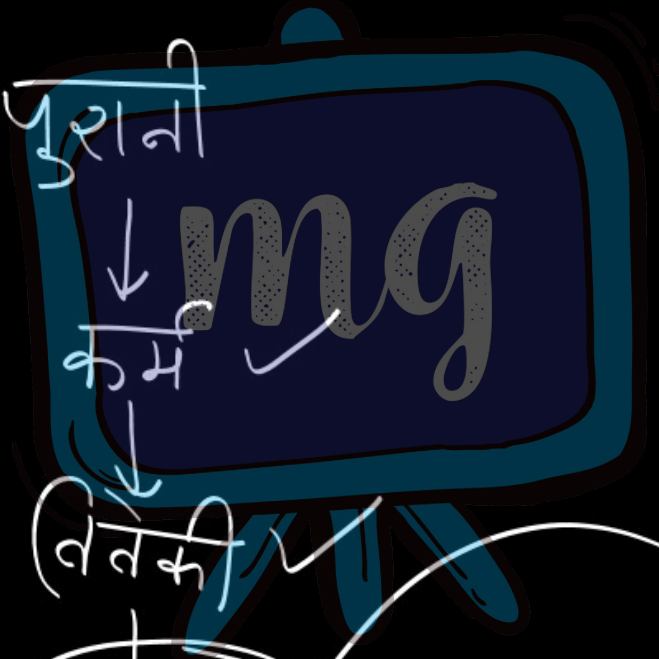


पहली सदी की बुद्ध मूर्ति, मथुरा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. महायान और हीनयान की परंपराओं को स्पष्ट करें?



पुरानी → कर्म → व्यक्तिवादी → हीनयान → थेरवादी

नई → उपासना → परोपकारी → निर्वाण → महायान

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पौराणिक हिंदू धर्म का उदय

- मुक्तिदाता की कल्पना सिर्फ बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थी।
- इसी तरह के विश्वास एक अलग ढंग से उन परंपराओं में भी विकसित हो रहे थे जिन्हें आज हिंदू धर्म के नाम से जाना जाता है।
- इसमें
  - (i) वैष्णव – वह परंपरा जिसमें विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना जाता है।
  - (ii) शैव – वह संकल्पना जिसमें शिव परमेश्वर है भी शामिल थीं।
- इसके अंतर्गत एक विशेष देवता की पूजा को खास महत्त्व दिया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इस प्रकार की आराधना में उपासना और ईश्वर के बीच का रिश्ता प्रेम और समर्पण का रिश्ता माना जाता था। इसे भक्ति कहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हीनयान या थेरवाद?

महायान के अनुयायी दूसरी बौद्ध परंपराओं के समर्थकों को हीनयान के अनुयायी कहते थे। लेकिन, पुरातन परंपरा के अनुयायी खुद को थेरवादी कहते थे। इसका मतलब है वे लोग जिन्होंने पुराने, प्रतिष्ठित शिक्षकों (जिन्हें थेर कहते थे) के बताए रास्ते पर चलने वाले।



पहली सदी की
बुद्ध मूर्ति, मथुरा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पौराणिक हिंदू धर्म का उदय

- मुक्तिदाता की कल्पना सिर्फ बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थी।
- इसी तरह के विश्वास एक अलग ढंग से उन परंपराओं में भी विकसित हो रहे थे जिन्हें आज हिंदू धर्म के नाम से जाना जाता है।
- इसमें
  (i) वैष्णव – वह परंपरा जिसमें विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना जाता है।
  (ii) शैव – वह संकल्पना जिसमें शिव परमेश्वर है भी शामिल थीं।
- इसके अंतर्गत एक विशेष देवता की पूजा को खास महत्त्व दिया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इस प्रकार की आराधना में उपासना और ईश्वर के बीच का रिश्ता प्रेम और समर्पण का रिश्ता माना जाता था। इसे भक्ति कहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

